पार्वती माता की आरती: जय पार्वती माता

पद 1

जय पार्वती माता, जय पार्वती माता।
ब्रह्म सनातन देवी, शुभ फल की दाता॥

पद 2

अरिकुल पद्म विनाशिनि, जय सेवक त्राता।
जग जीवन जगदम्बा, हरिहर गुण गाता॥

पद 3

सिंह को वाहन साजे, कुण्डल हैं साथा।
देव वधू जस गावत, नृत्य करत ताथा॥

पद 4

सतयुग रूप शील अतिसुंदर, नाम सती कहलाता।
हेमांचल घर जन्मी, सखियन संग राता॥

पद 5

शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमांचल स्थाता।
सहस्र भुजा तनु धरि के, चक्र लियो हाथा॥

पद 6

सृष्टि रूप तुही है जननी, शिव संग रंगराता।
नन्दी भृंगी बीन लही, सारा जग मदमाता॥

पद 7

देवन अरज करत, तव चित को लाता।
गावत दे दे ताली, मन में रंगराता॥

पद 8

श्री प्रताप आरती मैया की, जो कोई गाता।
सदा सुखी नित रहता, सुख सम्पत्ति पाता॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/parvati-aarti/